भारतीय परम्परा™
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage
वर्ष-४, अंक-३८, अगस्त-२०२४
©ANJU SRI ©ANJU SRI ©ANJU SRI
शिव -अराधना
www.bhartiyaparampara.com

भारतीय परम्परा™
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage
वर्ष-४, अंक-३८, अगस्त - २०२४

संपादक
प्रीति माहेश्वरी

प्रकाशन स्थल
मुम्बई

डिजाइनिंग टीम
MX CREATIVITY

सोशल कनेक्शन

हमसे जुडने के लिए आइकन पर स्पर्श करें

www.bhartiyaparampara.com

paramparabhartiya@gmail.com

मूल्य

आपका कीमती समय

साका कैलेण्डर-१९४५, विक्रम संवत-२०८१, अयान-दक्षिणायन, ऋतु-वर्षा

सोम		05 श्रावण शु. प्रतिपदा, श्रावण सोमवार व्रत	12 श्रावण शु. सप्तमी, श्रावण सोमवार व्रत	19 श्रावण शु. पूर्णिमा, पूर्णिमा व्रत, रक्षाबंधन	26 भाद्रपद कृ. अष्टमी, कृष्ण जन्माष्टमी
मंगल		06 श्रावण शु. द्वितीया	13 श्रावण शु. अष्टमी, मासिक दुर्गाष्टमी	20 भाद्रपद कृ. प्रतिपदा	27 भाद्रपद कृ. नवमी, गोगा नवमी, दही हाण्डी
बुध		07 श्रावण शु. तृतीया, हरियाली तीज	14 श्रावण शु. नवमी	21 भाद्रपद कृ. द्वितीया, तीज सिंजारा	28 भाद्रपद कृ. दशमी
गुरू	01 श्रावण कृ. द्वादशी	08 श्रावण शु. चतुर्थी, विनायक संकष्टी चतुर्थी	15 श्रावण शु. दशमी, स्वतंत्रता दिवस	22 भाद्रपद कृ. तृतीया, कजली/सातुडी/बडी तीज व्रत	29 भाद्रपद कृ. एकादशी, अजा एकादशी व्रत
शुक्र	02 श्रावण कृ. त्रयोदशी, प्रदोष व्रत	09 श्रावण शु. पंचमी, नाग पंचमी, श्री कल्की जंयती	16 श्रावण शु. एकादशी, पुत्रदा एकादशी व्रत	23 भाद्रपद कृ. चतुर्थी, बहुला चतुर्थी	30 भाद्रपद कृ. द्वादशी
शनि	03 श्रावण कृ. चतुर्दशी, मासिक शिवरात्रि, आदि पेरुक्कु पर्व	10 श्रावण शु. षष्ठी, स्कंद षष्ठी	17 श्रावण शु. द्वादशी, दामोदर द्वादशी	24 भाद्रपद कृ. पंचमी/षष्ठी, हल षष्ठी, बलराम जंयती	31 भाद्रपद कृ. त्रयोदशी, प्रदोष व्रत
रवि	04 श्रावण कृ. अमावस्या, हरियाली अमा. मित्रता दिवस	11 श्रावण शु. सप्तमी, तुलसीदास जंयती	18 श्रावण शु. त्रयोदशी, प्रदोष व्रत	25 भाद्रपद कृ. सप्तमी, शीतला सप्तमी	

कृ. - कृष्ण शु. - शुक्ल

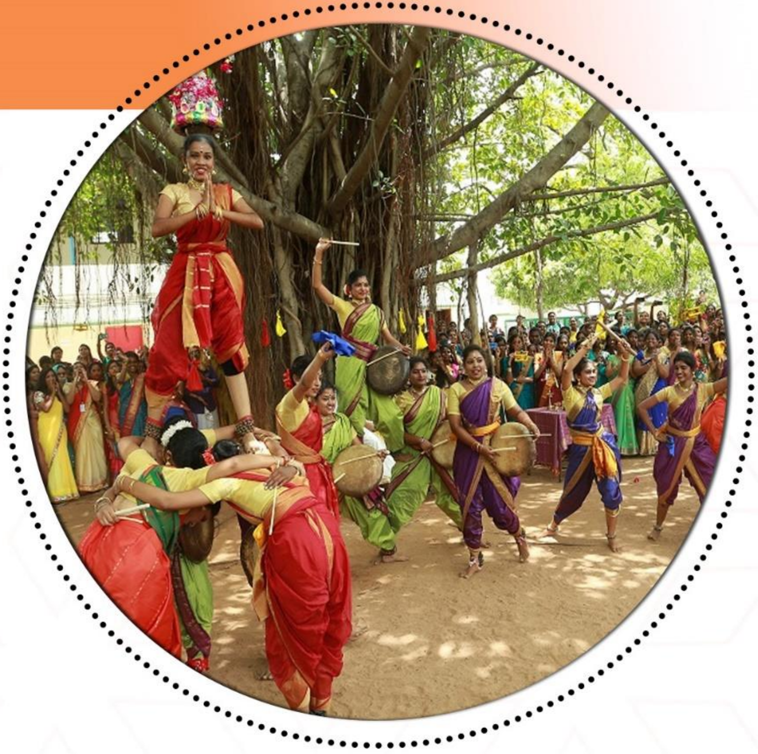

आदि पेरुक्कु पर्व: एक महत्वपूर्ण तमिल त्योहार

आदि पेरुक्कु पर्व तमिलनाडु का एक महत्वपूर्ण त्योहार है, जो मुख्य रूप से किसानों और जल देवता के प्रति श्रद्धा प्रकट करने के लिए मनाया जाता है। **यह त्योहार तमिल कैलेंडर के आदि महीने (जुलाई-अगस्त) के 18वें दिन मनाया जाता है। आदि पेरुक्कु को 'पथिनेट्टम पेरुक्कू' भी कहा जाता है, जिसका अर्थ है "अठारहवें दिन का त्योहार"।**

आदि पेरुक्कु मुख्य रूप से कावेरी नदी के किनारे बसे क्षेत्रों में मनाया जाता है। **इस त्योहार का प्रमुख उद्देश्य किसानों की फसलों के लिए जल संसाधनों की उपलब्धता को सुनिश्चित करना है।** कावेरी नदी, जो तमिलनाडु की जीवन रेखा मानी जाती है, इस पर्व के दौरान अपने पूर्ण प्रवाह में होती है। लोग **कावेरी नदी के किनारे एकत्र होते हैं और जल देवता के प्रति कृत-ज्ञता व्यक्त करते हैं।**

आदि पेरुक्कु के दिन, लोग नदी के किनारे जाकर विशेष पूजा-अर्चना करते हैं। इस अवसर पर महिलाएं रंग-बिरंगी साड़ियां पहनती हैं, नदी में दीप जलाकर प्रवाहित करती हैं। लोग अपने परिवार और दोस्तों के साथ नदी के किनारे पिकनिक मनाते हैं और विशेष व्यंजनों का आनंद लेते हैं। इस दिन का प्रमुख प्रसाद **'चित्रान्नम'** होता है, जो विभिन्न प्रकार के चावल के व्यंजनों से बनाया जाता है। आदि पेरुक्कु पर्व केवल एक धार्मिक उत्सव नहीं है, बल्कि यह प्रकृति के प्रति आभार व्यक्त करने का एक तरीका भी है। यह त्योहार हमें जल के महत्व और इसके संरक्षण की आवश्यकता को याद दिलाता है। यह पर्व उन लोगों के लिए विशेष महत्व रखता है जो कृषि पर निर्भर हैं, क्योंकि जल की उपलब्धता उनके लिए जीवन और मृत्यु का सवाल है।

इस प्रकार, आदि पेरुक्कु पर्व तमिल संस्कृति का एक अभिन्न हिस्सा है, जो सामुदायिक एकता, जल संरक्षण और प्रकृति के प्रति सम्मान को बढ़ावा देता है साथ ही सामुदायिक एकता, पर्यावरण संरक्षण और कृषि जीवन के महत्व को भी उजागर करते हैं। यह त्योहार हमें सिखाता है कि कैसे हम अपनी परंपराओं और प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाकर जीवन को खुशहाल और समृद्ध बना सकते हैं।

पूजा सहस्त्र गुणा फल देती हैं क्योंकि जितना ये मास भगवान महादेव को प्रिय हैं उतना दूसरा कोई भी नहीं। इस मास में लोगों को नियमपूर्वक व्रत करने चाहिए और इसी के साथ-साथ रुद्राभिषेक भी करना चाहिए।

इसी मास में लोग दूध का त्याग कर शिव शंकर का रुद्राभिषेक भी करते हैं, इसी में वैज्ञानिक तथ्य है कि वर्षा ऋतु के दौरान घास और चारे में कीटाणु पनपने लगते हैं जो कि हमारे शरीर के लिए हानिकारक होते हैं। ये भी मान्यता है कि इसी मास में लोग अपनी प्रिय वस्तु का त्याग कर महादेव की उपासना में लग जाते हैं। विभिन्न प्रकार के पुष्पों जैसे:- **मंदार, कनेर, धतूरा, आक पारिजात** आदि से महादेव की पूजा अर्चना की जाती हैं, जो कि मोक्ष प्रदान करने वाली होती हैं।

श्रावण मास में महादेव की आराधना -

"आदि अनादि अनंत अखंड
अभेद अखेद सुबेद बतावे
अलख अगोचर रूप महेश को
जोगी मुनि ध्यान न पावे
आगम निगम पुराण सबै
इतिहास सदा जिनके गुण गावे
बड़ भागी नर नारी सोई जो
सांब सदाशिव को नित ध्यावे"

इस मास के विषय में तो यहां तक गया हैं कि **"केवल्म भूमिशायी तु कैलाशे वा स्मापनुयात, प्रात: स्नानेमासी अब्दम तत्पाल भागभात"** - अर्थात इस मास में जो प्राणी भूमि पर शयन करता है, वह मोक्ष प्राप्त करने के पश्चात साक्षात कैलाश पर्वत पर निवास करता है और इस मास में एक दिन भी किया गया स्नान सम्पूर्ण वर्ष में किए गए स्नान जितना फलदात्री होता है। इसीलिए **कावड़ यात्रा का प्रारंभ भी इसी मास में होता है जब सम्पूर्ण राष्ट्र से लोग पवित्र नदियों से पैदल जल लाकर शिव शंकर का जलाभिषेक करते हैं।**

श्रावण मास की शुरुआत के साथ-साथ मंदिरों में **'हर हर महादेव'** के जयकारे और शंखों की गूंज से सम्पूर्ण विश्व गुंजायमान होने लगते हैं। ऐसी मान्यता है कि जैसे ही **आषाढ़ मास में शुक्ल पक्ष एकादशी को श्री हरी विष्णु चार महीने के लिए योग निद्रा में चले जाते हैं और इसी के साथ-साथ सृष्टि के पालन की जिम्मेदारी भगवान शिव शंकर ले लेते हैं।** इसी दौरान सभी प्रकार के शुभ कार्य चार महीनों तक बंद हो जाते हैं; जब तक कि विष्णु अपनी योग निद्रा से उठ नहीं जाते। **श्रावण मास में प्रत्येक की गई**

ऐसी मान्यता है कि जब देवी सती हिमालय राज के घर पार्वती रूप में अवतरित हुई तब माता ने इसी मास में निराहार रहकर कठिन तप किया जिसके फलस्वरूप महादेव उन्हें पति रूप में प्राप्त हुए। **इस मास की प्रतिपदा अग्नि देव को, तो द्वितीया तिथि ब्रह्मा को, तृतीया मां गौरी को, चतुर्थी गणपति को, पंचमी तिथि नाग देवता को तो वही षष्ठी तिथि कार्तिक जी को, सप्तमी तिथि सूर्य नारायण को तो अष्टमी तिथि शिव को, नवमी तिथि मां दुर्गा को, दशमी तिथि यम को, एकादशी तिथि विश्वेश्वर को, द्वादशी विष्णु को, त्रयोदशी तिथि कामदेव को, चतुर्दशी तिथि शिव शंकर को और पूर्णिमा तिथि चंद्रदेव को तथा अमावस्या पितृ देवों को समर्पित होती हैं।**

श्रवण मास में वातावरण इतना सुंदर हो जाता हैं, मानो सम्पूर्ण प्रकृति महादेव का स्वागत कर रही हो, बारिश की बूंदों के साथ-साथ मोर और कोयल आदि की मधुर ध्वनि सबके मन को प्रफुल्लित करती है और प्रकृति की सुंदरता में चार चांद लगा देती हैं। पेड़-पौधों में नई बहार आ जाती हैं और सभी पौधे सुंदर फूलों से लद जाते हैं। इसी मास में उज्जैन के महाराज **"महाकाल महाराज"** विश्व में एक बार अपनी प्रजा का हाल-चाल जानने के लिए निकलते हैं, उन्हें 'गाड्र्स ऑफ ऑनर' दिया जाता हैं; तथा ऐसी मान्यता है कि उज्जैन में उनके सिवा किसी और की सत्ता नहीं है; इसीलिए संपूर्ण विश्व से लोग इस शोभा यात्रा को देखने के लिए आते हैं।

इसी के साथ-साथ लग जाइए अपनी श्रद्धा अनुसार आप भी शिव शंकर की भक्ति में, क्योंकि जितना महत्व हमारे शास्त्र मानस पूजा का बताते है, उतना महत्व किसी और पूजा का नहीं है।

"अकाल मृत्यु वो मरे जो काम करें चंडाल का,
काल उसका क्या करें जो भक्त हो महाकाल का"

- विष्णु दत्त जी, दिल्ली

माना कि गोल्ड, सिल्वर हाथ न लगा,
पर जो मिला वो भी कम नहीं,
देखो भारत की बेटी ने पेरिस में
तिरंगा लहरा दिया,
बनी पहली पदक विजेता
ने निशाना सही लगा दिया ॥

- संगीता दरक जी

अगर आप अपने

‘शब्दों के मोती’

भारतीय परम्परा

की माला में पिरोना

चाहते है तो हमे सम्पर्क करें!

आपका लेख वेबसाइट

पर भी प्रकाशित किया जायेगा

paramparabhartiya@gmail.com

घोड़ों पर बैठे योद्धा वाली स्थापित मूर्तियों के संकेत

इस बार गर्मी की छुट्टियों में जब पोता-पोती दिल्ली घूम कर लौटे तब उन्होंने वहाँ जो-जो फोटो लिये थे, वह सब दिखाने लगे।

मैंने जब उनका फोटो महाराणा प्रताप व लक्ष्मीबाई की प्रतिमा के (नीचे खड़े होकर) साथ देखा तब मैंने उनसे उन प्रतिमाओं से क्या संकेत मिलता है, पूछा। पहले तो वे यही बोले ये शुरवीर थे लेकिन जब और स्पष्ट करते हुए मैंने पूछा कि ये जिस घोड़े पर बैठे हैं उससे क्या समझ में आता है तब उन्होंने कहा कि मार्गदर्शक ने ऐसा कुछ तो बताया ही नहीं।

तब मैंने उन्हें महाराणा प्रताप की घोड़े पर बैठी प्रतिमा देखने को कहा, जहाँ उस घोड़े का एक पाँव उठा हुआ है अर्थात हवा में है। वहीं रानी लक्ष्मी बाई की भी घोड़े पर बैठी प्रतिमा दिखा बताया कि यहाँ घोड़े के दोनों पाँव हवा में परिलक्षित अर्थात जमीन से उठे हुए दिखाई दे रहे हैं। तब बच्चों ने पूछा क्या रानी लक्ष्मी बाई महाराणा प्रताप से ज्यादा अच्छी घुड़सवार थीं क्योंकि इनके घोड़े के तो आगे वाले दोनों पाँव हवा में उठे हुए हैं?

तब मैंने उनसे कहा ऐसी बात नहीं है। दोनों ही एक समान अच्छे घुड़सवार के साथ - साथ पराक्रमी व शूरवीर थे।

प्रतिमा में घोड़े का एक पाँव हवा में या दो पाँव हवा में इसके अलावा दोनों पाँव जमीन पर से हमें योद्धाओं के बारे में कुछ संकेत मिलता है अर्थात घोड़ों का ऐसा रूप ऊपर बैठे योद्धा के बारे में बहुत कुछ बता देता है। जब बच्चों ने संकेतों के बारे में बताने का कहा तब मैंने उन्हें इन संकेतों के बारे में रात्रि में शान्ति से बताने का बता उन्हें फिलहाल अपना-अपना गृह कार्य निपटा लेने की सलाह दे, पढ़ने वास्ते भेज दिया।

रात्रि में बिस्तर पर जाने से पहले वे मेरे से जानने के लिये एक साथ आ धमके, तब उन्हें समझाते हुए उन्हें मैंने जो कुछ बताया वो इस प्रकार है -

जब मूर्ति में घोड़े का एक पाँव उठा हुआ, कहिये या हवा में है, से यह तात्पर्य है कि योद्धा लड़ाई के दौरान घायल / जख्मी हो गया और उस योद्धा की मृत्यु युद्ध क्षेत्र में नहीं

हुई बल्कि बाद में अन्य जगह पर उस जख्म के चलते हुई।

लेकिन जब बायाँ पैर हवा में हो तो उस घोड़े की मृत्यु उस पर बैठे योद्धा से पहले हुई। जैसा हम सब जगह घोड़े पर बैठे महाराणा प्रतापजी की मूर्ति में पाते हैं अर्थात उनका प्रिय और इतिहास में अमर हो चूका नीलवर्ण घोड़ा चेतक का बायाँ पैर हवा में उठा हुआ ही परिलक्षित होगा।

अब रानी लक्ष्मी बाई के घोड़े के दोनों पाँव हवा में थे। जिसका मतलब है कि इनको युद्ध श्रेत्र में लड़ते हुए वीरगति प्राप्त हुई।

इसके अलावा यह भी जान लो कि कुछ मूर्तियाँ ऐसी भी देखने को मिलेंगी जिसमें घोड़े के चारों पैर जमीन पर टिके हुए होंगे। उसका मतलब यही है कि उस घोड़े पर बैठे योद्धा की मृत्यु प्राकृतिक कारणों से हुई है।

उपरोक्त चर्चित तथ्यों का सारांश यह है कि -

1. घोड़े का आगे का एक पैर हवा में हों तो युद्ध में प्राप्त जख्म के कारण सम्मानित व्यक्ति की मृत्यु हुई है।

2. घोड़े के दोनों आगे के पैर हवा में हों तो सम्मानित व्यक्ति युद्ध में बलिदान हुआ है।

3. घोड़े के चारो पैर जमीन पर हों तो : प्राकृतिक कारण से सम्मानित व्यक्ति की मृत्यु हुई है।

4. घोड़े का आगे का बायाँ पैर हवा में हो तो उस घोड़े की मृत्यु उस पर बैठे योद्धा से पहले हुई है।

आशा है उपरोक्त बताये सारे तथ्यों को भूलोगे नहीं और समय-समय पर अपने सहपाठियों का ज्ञान वर्धन करते रहोगे।

- गोवर्धन दास बिन्नाणी जी, 'राजा बाबू', बीकानेर (राज.)

भारतीय परम्परा की मासिक ई-पत्रिका

नियमित प्राप्त करने हेतु हमें सम्पर्क करें!

- व्हाट्सप्प और टेलीग्राम पर से हर महीने के शुरू में नया अंक प्रेषित किया जाता है। यदि किसी कारणवश आपको नया अंक नहीं मिला हो तो कृपया हमें सूचित करें।

- भारतीय परम्परा ई-पत्रिका के लिए दिए गए नंबर **7303021123** को मोबाइल में सेव करें और व्हाट्सप्प एवं टेलीग्राम के ग्रुप से जुड़े।

- ई-पत्रिका में जहाँ कहीं भी सोशल मीडिया के आइकॉन बने हुए है उन्हें स्पर्श करने पर आप उस लिंक पर इंटरनेट के माध्यम से पहुँच सकते है।

- ई-पत्रिका में कुछ त्रुटियाँ हो तो हमें जरूर बताये और आपको पत्रिका पसंद आये तो अपने परिवारजनों और मित्रों के साथ शेयर करें।

- **भारतीय परंपराओं** को संजोये रखने एवं ई-पत्रिका को सुरुचिपूर्ण बनाने के लिए आपके सुझावों और विचारों से अवगत जरूर कराये।

तिरंगा

तिरंगे की हैं वे शान न्यारी
रंग हैं जो प्यारे - प्यारे ।
इसकी ख़ातिर वीरों ने
खुशियों से हैं प्राण वारे ।

रंग केसरिया है जो इसमें
वो हमें त्याग सिखाता है ।
रंग सफ़ेद है जो इसमें
वो शांति को दर्शाता है ।

रंग हरा हरियाली का और
प्रतीक है ख़ुशहाली का ।
चक्र नीला है इसमें सत्य
धर्म की रखवाली का ।

शीश झुकाकर नमन करें
चरणों में हम शीश धरें ।
इसका सम्मान बढ़ाने को
अपने प्राण आहुत करें ।

इसे कभी न झुकने देंगे
मान कभी न लुटने देंगे ।
ख़ुशी - ख़ुशी फहराकर
आसमान इसे छूने देंगे ।

- अशोक आनन जी, मक्सी,
जिला - शाजापुर (म.प्र.)

बादल भैया नखरे खूब तुम्हारे

वाह, वाह! जी बादल भैया,
नखरे खूब तुम्हारे ।

कुछ दिन पहले बूंद–बूंद पानी को तरसाया।
और अगर फिर बरसाया तो इतना बरसाया ।
नाली–नाले बहे और सब,
डूबे आँगन द्वारे ।

कभी बरसते खूब झमाझम, ढोल मृदंग बजाते।
और कभी बस गरज–गरज कर,
कोरी अकड़ दिखाते ।
कभी गगन में छा जाते हो, बादल कारे–कारे ।

मुझपर दोष लगाने वाले, सच्चाई को जानो ।
मानसून से गरजूं बरसूं,
बात हमारी मानो ।
खुश हो जब भी बरसूं गरजूं बहते जल के धारे ।

गरमी से सागर के जल से, जितनी भी बाष्प बने ।
उससे ही नभ में छाते हैं,
बादल ये सदा घने ।
सागर से लेकर सागर को, देता जल फुव्वारे ।
बोलो अब तो समझ में आई?
सीधी बात तुम्हारे ॥

- श्याम सुंदर श्रीवास्तव 'कोमल' जी,
भिण्ड (म. प्र.)

चल सखी अबकी बार...

मन के आंगन में हरियाली बिछाते हैं,
खुशियों के फूल खिलाते हैं ।
उमंगो की बुँदे बरसाकर,
मीठी यादों को टटोलकर
चल सखी अबकी बार
इसमें आस के बीज रोपते हैं।
उत्साह और जोश के मौसम में
धैर्य का खाद देते हैं,
आत्मविश्वास की लगा झड़ी
चल सखी अबकी बार मन के आँगन में
हरियाली बिछाते हैं।
भरोसे के बीज से उत्साह का पौधा
निकल आएगा,
उल्लास से हरा-भरा शाखाओं संग
इतरायेगा।
कलियों की महक से मन खिल जाएगा,
चल सखी अबकी बार
मन के आँगन में हरियाली बिछाते हैं।

- संगीता दरक जी, मनासा (म.प्र.)

सावन का महीना

बंजर धरती पर जब हरियाली लहराये।
उदास सूना-सूना दिल भी खिल-खिल जाये।
उमड़-उमड़ के बादल गरजने लग जाये।
जब सावन का महीना झूम-झूम कर आये॥
कलियाँ फूल बने उनपर भँवरे मंडरायें।
रिमझिम बरखा में मोर नाचे, पपीहा गायें।
प्रकृति को देखकर हर्षित मन मुस्काये।
जब सावन का महीना झूम-झूम कर आये॥
शिव की आराधना में अनुष्ठान करे जाये।
भक्त हर-हर महादेव के जयकारे लगाये।
कावड़ियाँ शिवलिंग का अभिषेक कराये।
जब सावन का महीना झूम-झूम कर आये॥
वृक्षों की शाखाओं पर झूले पड़-पड़ जाये।
स्त्रियां चूड़ी पहने हाथों में मेहंदी लगवायें।
भाइयों की कलाई पर बहने राखी सजायें।
जब सावन का महीना झूम-झूम कर आये॥

- सोनल मंजू श्री ओमर जी,
राजकोट (गुजरात)

336. धृतराष्ट्र व गांधारी के साथ और किसने वनप्रवास हेतु महलों का त्याग किया? - पांडवों की माता महारानी कुंती, संजय व विदुर ने भी धृतराष्ट्र और गांधारी के संग वनप्रवास हेतु महलों का त्याग किया।

337. वानप्रस्थ आश्रम के दौरान महर्षि व्यास ने धृतराष्ट्र की कौन सी आकांक्षा की पूर्ति की? - गंगा तट पर रात्रि के समय मुनिवर महर्षि व्यास ने युद्ध में मारे गए कौरव-पाण्डव पक्ष के सभी योद्धाओं और राजाओं को प्रकट किया।

338. महर्षि व्यास ने प्रमुख कौरव-पांडव योद्धाओं को किसका अंश बताया?

- धृतराष्ट्र-गंधर्वराज, महाराज पाण्डु-विष्णु, विदुर व युधिष्ठिर-धर्मराज, दुर्योधन-कलियुग, शकुनि-द्वापरयुग, दु:शासन व उसके भाई-राक्षस, भीमसेन-मरुद्गण, अर्जुन -ऋषि नर, श्रीकृष्ण-नारायण, नकुल व सहदेव-अश्विनी कुमार, अभिमन्यु- चन्द्र अंश, कर्ण-सूर्यअंश, द्रौपदी व धृष्टद्युम्न-अग्नि, शिखण्डी-राक्षस, द्रोणाचार्य-बृहस्पति, अश्वत्थामा-शंकर, भीष्म-एक वसु।

339. धृतराष्ट्र, गांधारी व कुंती का निधन कैसे हुआ?

- गंगातट पर दावाग्नि के दौरान समाधिस्थ अवस्था में उन तीनों ने देह त्याग दिया।

(इसके साथ ही आश्रमवासिक पर्व समाप्त हुआ। अगला पर्व है मौसलपर्व।)

340. कुरुक्षेत्र युद्ध के पश्चात महाराज युधिष्ठिर ने कितने वर्षों तक शासन किया?

- छत्तीस वर्षों तक ।

341. छत्तीसवें वर्ष में युधिष्ठिर को क्या दुखद समाचार मिला?

- मूसल के, श्रीकृष्ण व बलभद्र के अलावा समस्त वृष्णिवंशियों का संहार हो गया है।

342. युधिष्ठिर को यह समाचार किससे प्राप्त हुआ?

- भगवान श्रीकृष्ण की आज्ञा से उनका सारथी, दारुक यह समाचार लेकर आया।

343. इस विनाश का क्या कारण था?

- एक बार महर्षि विश्वामित्र, कण्व और नारद जी द्वारका में आये तो यदुवंशियों ने कृष्ण पुत्र साम्ब को स्त्रीवेश में प्रस्तुत कर पूछा कि इस के गर्भ से क्या उत्पन्न होगा। तिरस्कार से क्रोधित मुनियों ने कहा कि इसके गर्भ से एक

एक भयंकर मूसल उत्पन्न होगा, जिसके द्वारा तुम जैसे दुराचारी, क्रूर और क्रोधी लोग अपने समस्त कुल का संहार कर डालेंगे। केवल श्री कृष्ण व बलराम पर इसका वश नहीं चलेगा।

344. विनाश कैसे हुआ? -एक अवसर पर सात्यकि द्वारा कृतवर्मा का उपहास उड़ाने से शुरु हुआ विवाद शीघ्र ही आपसी मारकाट में बदल गया। अंधक, भोज, शिनि और वृष्णिवंशी के वीरों ने एक दूसरे को मार दिया।

345. बलभद्र बलराम जी ने अपनी देह कैसे त्यागी? - वे एक वृक्ष के नीचे समाधिस्थ हो गये। उनके मुख से सफेद रंग का एक बहुत बड़ा सांप निकला और समुद्र में समा गया। सांप के हजारों मस्तक थे, मुख की प्रभा रक्त वर्ण की थी। समुद्र ने स्वयं आकर उनका स्वागत व पूजन किया। भगवान बलभद्र शेषनाग का अवतार थे।

346. भगवान श्री कृष्ण ने कैसे स्वधामगमन किया? -श्रीकृष्ण सम्पूर्ण अर्थों में तत्ववेत्ता और अविनाशी देवता, परमपिता थे तो भी उन्होंने लीलावश परमधाम पधारने के उद्देश्य से मन-वाणी, इन्द्रियों का संयम किया और समाधि का अवलम्बन करके पृथ्वी पर लेट गये। उस समय वहां से गुजरते हुए जरा नाम के व्याध ने योग में स्थित हुए श्रीकृष्ण के पैर को मृग का मुंह समझ कर तीर मारा। भगवान उसी समय देह त्याग कर अपने परमधाम को चले गये।

347. अर्जुन द्वारा यदुवंश की स्त्रियों के साथ द्वारका छोड़ने पर द्वारका नगरी का क्या हुआ? -अर्जुन के द्वारा द्वारका नगरी छोड़ने के साथ ही समुद्र ने संपूर्ण द्वारका नगरी को अपने में समाहित कर लिया।

348. काल की गति अटल व न्यारी है, इसका सटीक उदाहरण क्या है?

-अर्जुन जब द्वारका नगरी से स्त्रियों को ले जा रहा था तो रास्ते में लट्ठ धारी लुटेरों ने हमला कर दिया और बहुत से धन, स्वर्ण के साथ-साथ स्त्रियों को भी लूट कर ले गये। अर्जुन का गाण्डीव अप्रभावी हो गया, अस्त्रशस्त्रों का ज्ञान लुप्त हो गया, उसका शरीर बलहीन और असक्त हो गया, अक्षय तीरों वाला तरकस खाली हो गया और अर्जुन की आंखों के सामने लूटपाट होती रही और वह असहाय दर्शक बना रहा। इस बाबत तुलसीदास जी लिखते है कि - **तुलसी नर का क्या बड़ा, समय बड़ा बलवान। भीलां लूटी गोपियां, वहीं अर्जुन वही बाण॥**

अर्थात मनुष्य छोटा या बड़ा नहीं होता वास्तव में उसका समय ही उसको छोटा या बड़ा बनाता है।

(मौसलपर्व समाप्त हुआ। अब महाप्रास्थानिक पर्व शुरु होता है।)

- माणक चन्द सुथार जी, बीकानेर (राज.)

जिस शरीर
के साथ हम पैदा हुए हैं,
उसके जिम्मेदार हम नहीं हैं,
परंतु जिस चरित्र और
किरदार के साथ हम विदा
होंगे, उसके पूरे जिम्मेदार
हम स्वयं होंगे...!

जिंदगी ऐसे जियो
जो खुद को पसंद आये,
दुनियावालों की पसंद
तो हर पल
बदलती रहती है।

हमेशा अपने समाधान
पर ध्यान दें,
समस्या पर नहीं।

जिसे जीना आता है वह
बिना किसी सुविधा के भी
खुश मिलेगा।
जिसे जीना नहीं आता, वह
सभी सुविधाओं के होते हुए
भी दुखी मिलेगा।

तीर्थ पर ही क्यों ढूंढ़ते हो
ईश्वर को ?
वह तो वहां भी मौजूद है,
जहां आप
गुनाह करते हैं...।

हौसले भी किसी हकीम से
कम नहीं होते हैं,
हर तकलीफ में ताक़त
की दवा देते हैं।

डोर विश्वास की - राखी

शिव आराधना का श्रावण मास आस्था और विश्वास के साथ ही प्रकृति के सुंदरतम श्रृंगार का मनभावन मौसम है। तृप्त धरा चारों और हरियाली की लहराती चुनर में इठलाती है। नदियों में ऊँची-ऊँची उठती लहरें और झरनों का सुमधुर कलरव हर मन को आकर्षित करता है।

ऐसे ही वर्षा ऋतु के सावन मास की पूनम को आता है भाई- बहन के अटूट प्रेम का पर्व **"रक्षाबंधन"** बचपन में यहीं एक रिश्ता होता है जो सर्वाधिक मजबूत होता है, छोटी - छोटी बातों पर होने वाले रोज के लड़ाई झगड़ो में कितना असीमित माधुर्य छिपा होता है इसका मात्र अहसास ही मन को हर्षित कर देता है।

वक्त अपनी रफ्तार से चलते जाता है और बहुत कुछ पीछे छूट जाता है साथ रहती है तो बस केवल यादें और यहीं यादें हमारे जीवन को संबल देती है हर स्थिति में खड़े रहने की हिम्मत देती है। भारतवर्ष में मनाए जाने वाले हर त्योहार के पीछे महत्वपूर्ण उद्देश्य रहा है।

शिशुपाल का वध करते समय सुदर्शन चक्र से श्रीकृष्ण की अंगुली कट जाती है, खून बहने लगता है तभी **द्रोपदी अपनी साड़ी का आंचल फाडकर श्रीकृष्ण की अंगुली पर पट्टी बांधती है द्रोपदी का व्याकुल मन और स्नेह देख श्रीकृष्ण सदेव उनकी रक्षा का प्रण लेते है।**

बहनों के मन में अपने भाईयों के प्रति अपार स्नेह छिपा होता है और उस स्नेह में असीमित ताकत छिपी होती है राखी केवल एक डोर नहीं यह रक्षा सूत्र है जो भाई के ऊपर आने वाली हर बला को टाल देता है।

परिवर्तन प्रकृति का नियम है किंतु आज भी यह त्योहार उतने ही उत्साह से मनाया जाता है उसके स्वरूप में थोडा परिवर्तन जरूर हुआ है किंतु रेशम के इस डोर की मजबूती का अहसास संकट के समय में द्रोपदी को हुआ तभी हस्तिनापुर में भरी सभा में श्रीकृष्ण ने अपनी बहन का चीरहरण होने से रोक लिया और उसकी रक्षा की। **हर भाई अपनी बहन का सुरक्षा कवच ही होता है वह स्वयं तकलीफ सह लेता है पर अपनी बहन को सुरक्षित, खुश देखना चाहता है।** विवाह के पश्चात जब बहन अपने ससुराल आती है तो तब उसे अपना भाई बहुत याद आता है जो छोटी छोटी बातों में उसकी मदद किया करता था। जब-जब ससुराल में कुछ आयोजन होते है या रक्षाबंधन पर ही भाई उपस्थित होता है तब बहना के खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहता भाई की उपस्थिति उसे गौरवान्वित

करती है, उसे धीरज देती है उसके अकेलेपन को दूर करती है और उसके मायके के होने का उसे मधुर अहसास कराती है हर भाई अपनी बहन का मजबूत आधार स्तंभ होता है।

वर्तमान की व्यस्ततम जीवनशैली में सभी अपने- अपने क्रियाकलापों में व्यस्त रहते हैं फिर भी अवसर निकाल कर हम अनेक उत्सवों, आयोजनों में शामिल होते ही हैं वैसे ही वर्ष में से केवल एक दिन का समय हर भाई अपनी बहन के लिए आरक्षित रखने का पुरजोर प्रयास करें स्नेह की इस डोर का प्रेम प्रगाढ़ रहे इसके लिए हर प्रयास करें छोटी-छोटी बातों को बचपन के नोक-झोंक की तरह भूल जाएं। हर बहन भी यह ध्यान रखें वह अनेक किरदार अपने जीवन में निभाती है जैसे बहन, ननद, भाभी वह स्वयं अपने हर किरदार में जो अपेक्षा अपने अपनों से रखती है वहीं व्यवहार और आचरण वह स्वयं भी आत्मसात करें तो खुशियों की महक से यह पावन रिश्ता फलता फूलता नजर आएगा।

प्रकृति का नियम है हम जो देते हैं वह लौटकर हमारे पास जरूर आता है। रेशम की इस पावन डोर को जतन से मजबूत बनाए रखें यह रिश्ता केवल डोर का नहीं है विश्वास का है भाई बहन के प्रगाढ़ प्रेम का है।

आस और विश्वास की, है यह पावन डोर।
भाई-बहन के प्रेम का, मिले ना कोई छोर।।

- **राजश्री राठी जी, अकोला (महाराष्ट्र)**

भारतीय परम्परा

की मासिक ई-पत्रिका के पुराने सभी अंकों को देखने के लिए किताब के आइकन पर स्पर्श करें !!

कजली तीज पूजा की विधि और कथा

नीम की डाली / टहनी से तीज की पूजा क्यों करते हैं?

- नीमडी माता की कथा
- तीज माता की कथा
- गणेश जी की कथा
- लपसी तपसी की कथा

- तीज की पूजा कैसे करते हैं?
- संकल्प कैसे लेते हैं?
- चॉद को अरख कैसे देते हैं?

- चौथ माता की कथा
- छींक चौथ माता की कथा
- गणेश जी की कथा
- लपसी तपसी की कथा

कथा सुनने के लिए ▶ को स्पर्श करें !

एक ऐसा व्रत जो खडे रहकर होता हैं ?

उपछठ का व्रत

उपछठ का व्रत होता है जो भादवा माह में कृष्ण पक्ष की छठ यानि षष्ठी तिथि को किया जाता है। सायंकाल के समय स्नान करने के बाद तैयार होकर खड़े रहते है जब तक की चन्द्रमा को अरख ना दे देवे। इस बीच मंदिरों के दर्शन को जाते है। चाँद को अरख देने के बाद भोजन ग्रहण किया जाता है।

उपछठ व्रत कथा के लिए आइकन को स्पर्श करें

बलराम जन्मदिवस की हार्दिक बधाई

इस दिन द्वापर युग में भगवान श्री कृष्ण के बड़े भाई बलराम का जन्म हुआ था। जिन्हे शेषनाग का अवतार भी माना जाता है। बलराम जी का शस्त्र हल और मूसल है इसीलिए इन्हें **"हलधर"** भी कहा जाता है, साथ ही **"संकर्षण, हलायुध, काम, रोहिणीनन्दन और नीलाम्बर"** आदि नामों से भी जाना जाता है। भारत देश कृषि प्रधान देश है और हल कृषि के लिए प्राणतत्व है इसलिए बलराम जन्मोत्सव पर हल की पूजा करने का विधान है। बलराम जन्मदिवस को **"हल षष्ठी, चन्दन षष्ठी और चंद्र छठ"** के नाम से भी जाना जाता है।

उडद दाल की बूंदी

अधिकतर बूंदी बेसन से बनाई जाती है और इसका उपयोग कई तरह से होता है। नमकीन बूंदी से रायता या नमकीन चूड़ा बनाया जा सकता है। फीकी बूंदी को चाशनी में डालकर मीठा भी बनाया जा सकता है। श्राद्ध के दिनों में इसका प्रयोग पितृ दोष समाप्त करने के लिए किया जाता है। आज हम आपको उड़द दाल की मीठी बूंदी बनाना सिखाएंगे।

सामग्री - आधी कटोरी धुली हुई उड़द की दाल, एक कटोरी मैदा, बूंदी तलने के लिए घी अथवा तेल, चाशनी बनाने के लिए शक्कर, एक चुटकी बेकिंग सोडा।

विधि - 1. उड़द की दाल को अच्छी तरह धोकर 5-6 घंटे पानी में भिगो दें। दाल फूल जाने पर इसे पानी से निकालकर अच्छी तरह धो लें और सारा पानी निकाल दें।

2. अब इस उड़द की दाल को मिक्सी में डालकर 2-3 चम्मच पानी मिलाएं और बारीक पीस लें। फिर एक मिनट और पीसें ताकि दाल अच्छी तरह फेंट जाए।

3. दाल को अलग रख दें। मैदा में थोड़ा-थोड़ा पानी डालकर पेस्ट बना लें और अच्छी तरह फेंट लें। अब हमारे पास मैदा और दाल दोनों का पेस्ट तैयार है।

4. कढ़ाई में दो कटोरी शक्कर और आधा कटोरी पानी डालें। शक्कर घुलने पर इसे उंगली और अंगूठे से चेक करें, चिपचिपाहट होने पर गैस बंद कर दें। तार की चाशनी नहीं बनानी है।

5. मैदा के घोल में पिसी हुई उड़द दाल का पेस्ट मिलाएं और थोड़ी देर फेंट लें। आधी चुटकी बेकिंग सोडा डालकर अच्छी तरह मिलाएं। पेस्ट ना बहुत गाढ़ा हो और ना बहुत पतला।

6. गैस पर कढ़ाई रखें और तेल या घी गरम करें। झारे को उल्टे हाथ से पकड़े और थोड़ा ऊंचा रखें। चम्मच से पेस्ट को झारे के ऊपर डालें। बूंदी अपने आप कढ़ाई में गिरेगी।

7. जब बूंदी सुनहरी हो जाए, इसे निकालकर चाशनी में डाल दें। इसी तरह सारी बूंदी बना लें और चाशनी में डालें।

8. 10-15 मिनट बाद बूंदी को चाशनी से निकालकर फैला दें ताकि यह सूख जाए। ऊपर से पिसी हुई इलायची पाउडर या कटी हुई मेवा बुरक दें। लीजिए तैयार है उड़द दाल की मीठी बूंदी।

- अधिवक्ता उषा चतुर्वेदी जी, इंदौर (म. प्र.)

पारंपरिक व्यंजन-तिरंगा पेडा

आज हम बिना गैस और बिना ओवन का तिरंगा पेड़ा बनाना सीखेंगे।

सामग्री: एक कप चीनी, एक कप नारियल का बुरादा, एक कप मिल्क पाउडर, 10 साबुत काजू, दो बूंद केवड़ा एसेंस, बाइंडिंग के लिए आवश्यकतानुसार मलाई या दूध

विधि: मिक्सर जार में काजू और चीनी को एक साथ पीस लें। फिर एक बाउल में पिसी चीनी, मिल्क पाउडर, और नारियल का बुरादा मिलाएं। उसमें एक-एक चम्मच मलाई डालकर आटे की तरह गूंथ लें। जब आटा बन जाए, उसे तीन भागों में बांट लें। एक भाग में हरा रंग और दूसरे भाग में केसरिया रंग मिलाएं। तीसरा भाग सफेद ही रखें। अब इन तीनों भागों की छोटी-छोटी गोलियां बनाएं। फिर तीनों रंग की एक-एक गोली लेकर हल्के हाथ से मिलाकर पेड़ा बनाएं। आपका तिरंगा पेड़ा तैयार है।

रसोई युक्तियां-

1. उबले टमाटरों से छिलका आसानी से उतारने के लिए टमाटरों पर क्रॉस का निशान लगाएं और फिर उबालें।
2. अगर सब्जी की ग्रेवी में नमक ज्यादा हो गया हो तो उसमें ब्रेड, आलू, या गेहूं के आटे की छोटी-छोटी बॉल्स डाल दें और एक घंटे बाद निकालकर सर्व करें।
3. पालक या मटर को उबालते समय एक चुटकी बेकिंग सोडा डालें, इससे उनका गहरा रंग बना रहेगा।
4. करेलों की कड़वाहट दूर करने के लिए उन्हें नमक वाले पानी में 20 मिनट के लिए भिगो दें, फिर पानी निकालकर पकाएं।

होम रेमेडीज -

1. दो चम्मच नारियल तेल नहाने के पानी में डालें, इससे त्वचा चमकदार होगी।
2. दांत में दर्द हो तो हींग को पानी में उबालकर उससे कुल्ले करें, दर्द दूर होगा।

. पेट साफ न हो तो तुलसी के चार-पांच पत्ते रात को पानी के गिलास में डालकर रखें और सुबह वह पानी पी लें, पेट साफ हो जाएगा।

विविधा कुकिंग क्लासेस, पूनम राठी जी, नागपुर

आज अध्यापक कक्षा में कदम रखते ही बच्चों से बोले – "बच्चों ! आज सभी अपने–अपने पिताजी को एक पत्र लिखेंगे।
पत्र में अगले महीने पेरेंट्स मीटिंग रखी गई है। इस बार हम किसी के पेरेंट्स को कॉल या मैसेज नहीं करेंगे।
आपकी बातें डाक के माध्यम से प्रेषित की जायेगी। ये समझ लो कि पत्र लिखना तुम सबका आज का कक्षा कार्य है।
क्यों बच्चों, सभी तैयार हो न ?"
सभी बच्चों ने हामी भरी।

बच्चों ने पत्र लिखना प्रारंभ किया। थोड़ी देर बाद बच्चे बारी–बारी से अध्यापक को पत्र दिखाने लगे। अध्यापक बहुत खुश थे।

बच्चों के द्वारा लिखे मासूमियत भरे शब्द उन्हें बचपन की ओर आकर्षित कर रहे थे।

कक्षा में घूमते हुए वे एक प्रिशा नाम की लड़की के पास पहुँचे। उसका पत्र अभी तक उनके पास नहीं आया था।

तभी अध्यापक ने देखा कि प्रिशा पत्र लिख कर बार-बार फाड़ती जा रही है।
उन्हें आश्चर्य हुआ।
पूछा- "क्या बात है बेटा? प्रिशा, तुम ऐसा क्यों कर रही हो? बड़ी परेशान लग रही हो।
बताओ प्रिशा, क्या बात है ?"

प्रिशा सुबकती हुई बोली - "सर जी! मेरे पापा जी तो भगवान जी के पास चले गए हैं। मैं उन्हें अपना पत्र कैसे भेजूं ?
मुझे भगवान का एड्रेस नहीं मालूम। कुछ समझ नहीं आ रहा है। आप ही बताइए न सर जी। मेरा पत्र भगवान जी के पास कैसे पहुंचेगा?"

धारा प्रवाह बोलती हुई प्रिशा का गला भर आया।
प्रिशा की भीगी पलकें देख अध्यापक को बड़ा दुःख हुआ।

उनके पास प्रिशा के लिए कोई जवाब नहीं था।

प्रिशा अध्यापक के जवाब का इंतजार कर रही थी।

- प्रिया देवांगन जी "प्रियू", राजिम, जिला - गरियाबंद (छत्तीसगढ़)

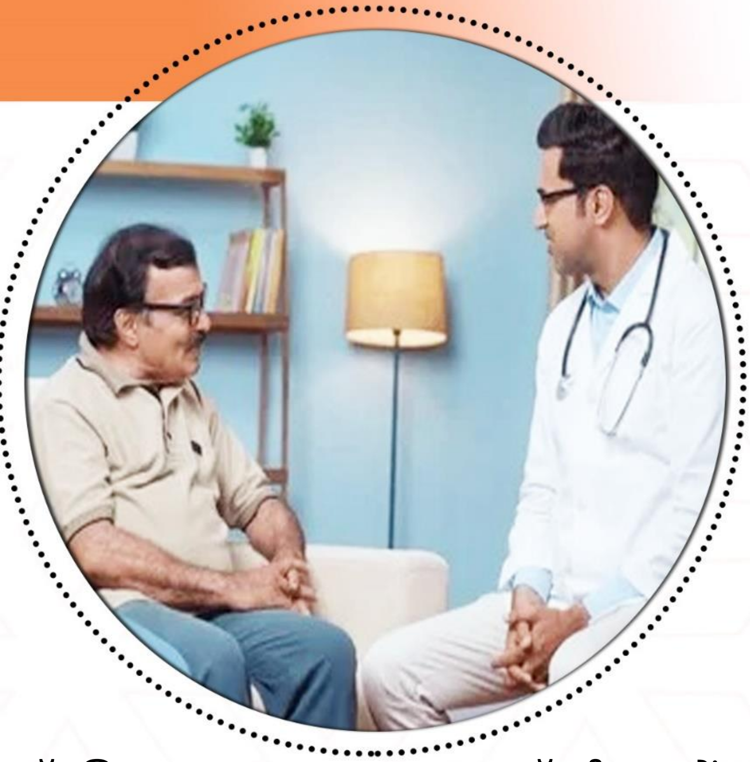

डॉ. विश्वास का आज इस नए हॉस्पीटल में पहला ही दिन था। पिछले सप्ताह ही उसकी एमडी पूरी हुई थी और एक सप्ताह के अंदर ही उसे एक सरकारी हॉस्पीटल में नौकरी मिल गई थी। हॉस्पीटल से लौटने के बाद विश्वास बहुत प्रसन्नचित लग रहा था। उसके चेहरे पर व्याप्त प्रसन्नता को देखकर उसके माता-पिता और उसकी बहन सभी बड़े ख़ुश थे। बहन ने कहा, "लगता है भाई आप इस नौकरी व हॉस्पीटल के माहौल से ख़ुश हो।"

"हाँ, हूँ लेकिन मेरी ख़ुशी का एक कारण और भी है," विश्वास ने कहा।

"क्या?" घर के सभी सदस्यों ने एक साथ उत्सुकता प्रदर्शित की।

विश्वास ने कहा कि आज पहले ही दिन दस हज़ार रुपए का नुक़सान हो गया।

"कैसे?" पुनः एक समवेत स्वर उभरा। माँ ने जिज्ञासा प्रकट की, "नुक़सान होने पर भी कोई ख़ुश होता है क्या?"

"बात को घुमा-फिराकर कहने की बजाय सीधे-सीधे क्यों नहीं बतलाता कि क्या हुआ? मोबाइल खो गया? जेब कट गई? नुक़सान कैसे हो गया?" पिताजी ने एक ही बार में लगातार कई सवाल कर डाले।

नहीं, नहीं, आप घबराइए नहीं, ऐसा कुछ नहीं हुआ है विश्वास ने सबको आश्वस्त करते हुए कहा।

दरअसल आज एक एनजीओ ने एक फ़ैक्टरी पर छापा मारकर वहाँ काम कर रहे कुछ नाबालिग़ बच्चों को छुड़वाया था। उन बच्चों की उम्र की जाँच करवाने के लिए पुलिस उन्हें लेकर डॉ. विश्वास के हॉस्पीटल आई थी।

उसी दौरान डॉ. विश्वास के रूम में एक आदमी आया और मेज़ पर कुछ रुपए रखते हुए बोला कि डॉक्टर ये दस हज़ार रुपए हैं इन्हें रख लो और अपनी रिपोर्ट में प्लीज़ सभी बच्चों की उम्र पंद्रह साल से ऊपर लिख दो।

लेकिन उनमें से कोई भी बच्चा चौदह साल से ज़्यादा उम्र का नहीं लग रहा था। कई बच्चे तो दस-बारह साल के ही लग रहे थे। उन बच्चों की हालत देखकर ही डॉ. विश्वास को बड़ा दुख हो रहा था।

डॉ. विश्वास ने नोटों का पैकेट उठाकर वापस उस आदमी के हाथ में देते हुए उसे फौरन बाहर निकल जाने का इशारा किया। जब उस आदमी ने कहा कि वह जितने चाहिए और रुपए देने को तैयार है तो डॉ. विश्वास को ग़ुस्सा आ गया और उसने एक तरह से धक्का मार कर उसे बाहर कर दिया।

डॉ. विश्वास ने वही रिपोर्ट लिखी जो ठीक थी और एकदम सही उम्र का पता लगाने के लिए बोन ऑसिफिकेशन टेस्ट के लिए सारे केस आगे रैफ़र कर दिए। **पूरी घटना का विस्तारपूर्वक वर्णन करने के बाद डॉ. विश्वास ने काल्पनिक गंभीरता के साथ कहा, “तो हो गया न पहले ही दिन दस हज़ार रुपए का नुक़सान।”**

“बेटा ऐसा नुक़सान रोज़-रोज़ करके आना और हमें बतलाना। इसी में हमें सच्ची ख़ुशी मिलेगी। मैं सचमुच बहुत ख़ुश हूँ कि हमारे बच्चे नुक़सान करना सीख रहे हैं और ये नुक़सान ही हमारा सबसे बड़ा फ़ायदा है,” - ये कह कर पिताजी ने अपना हाथ विश्वास के सिर पर रख दिया और विश्वास ने अपना सिर पिताजी के कंधे से सटा दिया।

- **सीताराम गुप्ता जी, पीतमपुरा (दिल्ली)**

देश की पहली साहित्यिक ई-पत्रिका जो पठनीय-श्रवणीय-दर्शनीय है । पत्रिका में दिए गए ऑडियो-वीडियो का निर्मल आनंद उठाया जा सकता है।

मूल्य : मात्र आपकी मुस्कान

8610502230
(केवल संदेश हेतु)
(कृपया अपना नाम व शहर का नाम भी लिखें)

सामने दिए गए चिह्न को दबाने से आपका संदेश स्वचलित रूप से हमें पहुँच जाएगा और नियमित पत्रिकाएँ भेजने के लिए आपका मोबाइल नं.पंजीकृत हो जाएगा।

"विरासत को संजोए रखने की अनोखी पहल"

उत्तराखंड को यों ही देवभूमि नहीं कहा जाता, बल्कि यहां के लोकाचार, परम्परायें एवं रीति रिवाज इसको देवभूमि कहलाने की पुष्टि करते हैं।

उत्तराखंड के बहुत से गाँवों में ज्येष्ठ माह (जून माह) में रवि की फसल से प्राप्त अनाज (गेहूं) को अपने इष्ट देवताओं को भोग लगाने के बाद ही अपने प्रयोग में लाने की परम्परा है। इसी परंपरा के तहत **रुद्रप्रयाग जनपद के विकासखंड अगस्त्यमुनि के धारकोट, निर्वाली गाँव में पिछले पांच सौ से भी अधिक सालों से स्थानीय चण्डिका मन्दिर व ईशानेश्वर महादेव मन्दिर में, गेंहू को पीसकर आटे से भोग लगाने की परम्परा का निर्वहन होता चला आ रहा है।**

इस काम में गांव के युवाओं द्वारा सेवित ग्राम के **प्रत्येक परिवार से लगभग 100 ग्राम गेहूं का आटा इकट्ठा किया जाता है, साथ ही भोग व भोजन की अन्य सामग्री को जुटाने के लिए कुछ धनराशि (जो 100 परिवारों में बीस रुपये होती है) इकट्ठा की जाती है। विशेषता वाली बात यह है कि "यह आटा हाल में ही खेती से प्राप्त गेहूं से बना होता है।"** यदि कोई परिवार अभी तक पुराने साल के ही गेहूं के आटे या बाजार से खरीदकर लाये गये आटे का ही प्रयोग कर रहा हो, तो वह पड़ोसी परिवार से नये गेहूं का आटा पैंछा (उधार) लेता है, और बाद में नये गेहूं पिसा कर, उस उधार को वापस कर लेता है।

गाँव के प्रत्येक परिवार से इकट्ठे किये गये इस आटे को भोग व भोजन की क्रय की गई अन्य सामग्री के साथ, स्थानीय चण्डिका मन्दिर परिसर तक पहुँचाया जाता है, जहाँ ग्राम समाज की ओर से नियत पांच व्यक्ति (पंचजन) यजमान के रूप में देवी के पूजन अर्चन का कार्य करते हैं। पूजन के विधि विधान की तैयारी मंदिर का रख रखाव कर रहे, गाँव के सेमवाल परिवार करते हैं, तो वहीं पूजन कार्य में मुख्य पुरोहित की भूमिका चौकियाल जाति के ब्राह्मणों द्वारा निभाई जाती है।

पूजन में गाँव की अधिष्ठात्री देवी व देवाधिदेव महादेव ईशानेश्वर से सुख एवं आरोग्यता की कामना की जाती है।

इस अवसर पर गाँव के प्रत्येक परिवार का

एक सदस्य इस पूजन में भाग लेता है। युवाओं द्वारा मन्दिर परिसर में ही स्थित विशाल बरगद के वृक्ष के नीचे विभिन्न पकवान बनाये जाते हैं, जबकि देवी को भोग चढ़ाये जाने वाले वाले व्यंजन, मन्दिर की ही भोगशाला में बनाये जाते हैं।

इस अवसर पर भक्तों की प्रार्थना पर अपने नर पश्वा पर मां चण्डिका अवतरित होकर भक्तों को आशीर्वाद प्रदान करती है।

- हेमंत चौकियाल जी, रुद्रप्रयाग (उत्तराखंड)

डाकू : हम घर
लूटने आए हैं, मगर बंदूक घर
पर भूल आए हैं..!
पप्पू : कोई बात नहीं, आप
लोग शरीफ आदमी लगते हो,
आज घर लूट लो, कल आकर
बंदूक जरूर दिखा जाना !

आज मैंने अपने दिल से पूछा
प्यार क्या है? दिल ने जवाब
दिया - देख, मेरा काम है
खून सप्लाई करना... फालतू
की बात मत किया कर..!

एक दवाई की दुकान पर
लगा हुआ बोर्ड...
हमें दवाई की EXPIRY DATE
का पता है... लेकिन आपकी
नहीं...! इसलिये कृपया
उधार न मांगें !

विश्व के तीन सत्य -
बहू, नारियल, दामाद
कैसा निकलेगा कोई
माई का लाल नहीं बता
सकता...!

प्रार्थना समाप्त होते ही
मनुष्य अपने फोन की
तरफ यूं भागता है जैसे की
प्रभु ने उसकी प्रार्थना
स्वीकार होने का
OTP भेजा हो...!

पेट के अंदर
तो सब जाता है...
बस पेट
अंदर नहीं जाता...!

मानसिक शांति के लिए व्यवस्थित दिनचर्या बहुत ज़रूरी है, हम किसी काम की शुरुआत करने में जितना विलंब करेंगे, वह काम पूरा होने में उतना ही समय लेगा। इससे हड़बड़ाहट और तनाव बढ़ता है और जिसका असर मस्तिष्क पर पड़ता है। लिहाज़ा, मानसिक स्वास्थ्य के लिए दिनचर्या का समयानुसार पालन करना बहुत ज़रूरी है।

यदि हमारी दिनचर्या अच्छी है और नियमित बनी हुई है, तब उसका सकारात्मक प्रभाव हमारे मन पर पड़ता है। हमारा मन शांत रहता है और हम चिंता व तनाव से दूर रहते हैं। **अच्छी दिनचर्या जैसे- सुबह जल्दी उठना, व्यायाम करना, नाश्ता करना, रात्रि भोजन समय पर करना... आदि, इससे किसी भी काम में हड़बड़ाहट नहीं होगी।**

वहीं यदि हमारी दिनचर्या बिगड़ी हुई है, जैसे- देर से सोना, देर से उठना या भोजन समय पर नहीं करना...आदि, तब हमारे शरीर के आंतरिक क्रियाकलाप पर दुष्प्रभाव पड़ता है, जिससे हम कई बीमारियों को स्वयं न्यौता दे देते हैं।

जब हम सुबह थोड़ा जल्दी उठते हैं, तो हमारे पास व्यायाम व सैर के लिए वक्त होगा, सुबह का नाश्ता भी समय पर होगा एवं दोपहर व रात्रि के भोजन भी समय पर हो सकेगा। यदि हम रात्रि में समय पर सोएंगे और सुबह समय पर उठेंगे, नींद पूरी लेंगे, समय पर खाएंगे, तो अन्य काम करते वक्त भी सजग रहेंगे। इससे हमारे पास अतिरिक्त समय होगा, जिसका उपयोग हम स्वयं के लिए कर सकेंगे।

जब हमारी समय पर काम करने की आदतें सुधरेंगी, तो जल्दबाजी के चलते होने वाली चिड़चिड़ाहट, गुस्सा व तनाव से भी दूर रहेंगे।

दिनचर्या नियमित होने से आलस्य खत्म होता है, हम स्वस्थ और ऊर्जावान महसूस करते हैं। जब शरीर स्वस्थ रहता है, तब कोई भी काम उबाऊ नहीं लगता और हम थका हुआ भी महसूस नहीं करते।

हर व्यक्ति के जीवन का कोई न कोई लक्ष्य ज़रूर होता है, जब उसकी दिनचर्या सही होती है तो लक्ष्य भी हासिल करने में उसे मदद मिलती है। जैसे- किसी व्यक्ति का लक्ष्य वजन कम करना है या कोई कौशल सीखना है, परन्तु वह समय पर नहीं उठता, तब उसके सब काम देरी से होते हैं, व्यायाम, सैर या कुछ सीखने का समय ही नहीं बचता है उसके

पास?? और, जब जीवन के लक्ष्य हासिल नहीं होते तो तनाव बढ़ता है और मानसिक स्वास्थ्य भी प्रभावित होता है।

हे परमात्मा!!
सौ बात की एक बात, कि यदि हम अपनी दिनचर्या सुधार लें, तो हमारे पास अपने लक्ष्यों के लिए पर्याप्त समय होगा।
इससे हमें मानसिक संतुष्टि मिलेगी और हमें तनाव, कुंठा और क्रोध नहीं होगा एवं अपने लक्ष्यों को हासिल करने की खुशी भी होगी।
सबका जीवन शांति और सुख से बीते, यही ईश्वर से प्रार्थना है।

धन्यवाद!!

- **मधु अजमेरा जी, ग्वालियर (म. प्र.)**

परंपराओं एवं परिवार भाव को पोषित करता : सूर्य नारायण मंदिर

बेंगलुरु शहर के डोम्लुर क्षेत्र में स्थित सूर्य नारायण मंदिर भारत के सूर्य देव मंदिरों में अनुपम है। मैंने सबसे पहले कोणार्क के सूर्य मंदिर की अत्यधिक प्रशंसा सुनी थी और अभी कुछ समय पूर्व उसे देखा भी। निस्संदेह वहां का वास्तुशिल्प, नक्काशी और परिकल्पना उच्च कोटि की रही है तथा क्षेत्रफल भी बहुत अधिक है पर अब वह खंडहर में बदल रहा है। कई वर्षों से वहाँ पूजा नहीं होती है।

ग्वालियर का सूर्य मंदिर कोणार्क की प्रतिलिपि कहा जाता है, वहाँ भी मैं वर्षों तक दर्शन का सौभाग्य प्राप्त करती रही हूँ। इंदौर के सुंदर सूर्य मंदिर में भी सूर्यदेव का आशीर्वाद लिया है। किन्तु बेंगलुरु के सूर्य मंदिर जैसी भव्यता, पवित्रता और जीवंतता दुर्लभ ही रही है। यह मंदिर बेंगलुरु के मुख्य बाजार के निकट बना है, बस्ती के बीच में है फिर भी शांति का दिव्य अनुभव होता है। **भगवान सूर्य नारायण (सूर्य देव) के इस मंदिर का निर्माण वर्ष 1995 में श्री पटेल डी. आर. कृष्णा रेड्डी द्वारा किया गया है,** और इसका **उद्घाटन तुमकुर के सिद्ध गंगा मठ के परम पूज्य श्री श्री श्री शिवकुमार स्वामीजी ने किया था- यह वहाँ के शिलालेख में अंकित है।**

लाखों मंदिरों की इस भूमि में डोम्लुर का सूर्य नारायण मंदिर भारत के सबसे खूबसूरत आधुनिक मंदिरों में से एक है! यह समृद्ध चोल मंदिर वास्तुकला शैली में विशेषज्ञ कारीगरों द्वारा निर्मित किया गया है। **सूर्यनारायण की भव्य मूर्ति बद्रीनाथ से खरीदी गई है। प्रभावली के साथ इसकी ऊंचाई 3.25 फीट है।** आधार पर सूर्यदेव के पिताश्री कश्यप ऋषि और माता अदिति की मूर्तियाँ हैं, अर्थात यहाँ सूर्यदेव अपने माता-पिता के साथ पूजित हैं।

गर्भगृह के बाहर, वैष्णवी, ब्रह्मा, नागराज, उग्र नरसिम्हा, सरस्वती, पंचमुखी गणेश के अलावा सूर्य और आदि शेषशायी के दर्शन होते हैं, जो भक्तों पर अपनी कृपा बरसा रहे हैं। मंदिर परिसर में एक अद्भुत उद्भव हत्या (पवित्र स्तंभ) मौजूद है, जो मंच के निर्माण के बाद बनाया गया है। मंदिर हर समय एकदम साफ-सुथरा दिखता है - मैं यदि यह कहूँ कि यह देश के सबसे स्वच्छ मंदिर परिसरों में से एक है, तो ग़लत नहीं होगा।

साफ़-सफ़ाई यहाँ की दैनिक दिनचर्या लगती है। सफाई के आधुनिक उपकरणों से सफाई होती है मैंने मंदिर परिसर की गहन सूक्ष्म सफाई और धुलाई होते देखी है। मंदिर के कोने कोने और हर स्तंभ की सफाई प्रतिदिन होती है।

सूर्य देव मंदिर के चारों ओर के परिक्षेत्र में ऊपर 46 सुंदर मूर्तियों में विविध देवी देवता सुशोभित है। 22 बड़े भित्ति चित्र लगे हैं। इस मंदिर का गोपुरम 325 फीट ऊंचा अत्यंत सुंदर और विविध कलात्मक देव मूर्तियों से सुसज्जित है।

उत्सव के दिनों में सड़क मार्ग से मंदिर तक सुंदर विद्युत सज्जा होती है और मंदिर की सज्जा तो अति कलात्मक और अद्भुत होती है। गोपुरम की विद्युत सज्जा ऐसी प्रतीत होती है जैसे मंदिर पर प्रकाश का अभिषेक हो रहा हो। प्रति रविवार को भी मंदिर पर बहुत सुन्दर विद्युत सज्जा होती है। सज्जा में अनेक पारंपरिक उपादानों का प्रयोग होता है। रथ सप्तमी को सूर्यदेव का जन्मदिन बहुत ही धूमधाम से आठ दिन तक विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों के साथ मनाया जाता है। **रथ सप्तमी के दिन यहां एक वार्षिक मेला लगता है इस उत्सव के दौरान यहां 32 फीट लंबा सूर्य देव का रथ सजा कर निकाला जाता है और हजारों भक्त जिसे खींचते हैं।** वैसे तो मंदिर में बड़ी संख्या में भक्त प्रतिदिन दर्शन करते हैं किन्तु **माघ मास सुधा तृती-या से दशमी तक 8 दिवसीय उत्सव (जिसे यहां ब्रह्मोत्सव कहा जाता है) के दौरान भक्तों का सैलाब उमड़ता है।** सभी सूर्य मंदिरों की तरह ही यहाँ प्रतिदिन सूर्योदय और सूर्यास्त के समय भव्य आरती का आयोजन होता है। इसके अतिरिक्त **जब भी भक्त आते हैं तब भगवान की आरती करके आरती दी जाती है और पुजारी जी प्रत्येक नाम कुल गोत्र पूछकर सिर पर शडारी (पीतल का सुंदर टोपनुमा आकृति जिस पर भगवान के चरण अंकित होते हैं।** यह दक्षिण भारत के विष्णु मंदिर में प्रयुक्त होता है। यह सूर्य नारायण मंदिर होने से यहाँ प्रयुक्त होता है) **रखकर आशीर्वाद देते हैं, यह मुझे बहुत ही विशिष्ट और भावमय अनुभव देता है।**

यहाँ का प्रसाद भी विशिष्ट होता है - कभी केसरिया भात, कभी हलवा और कभी चावल के दक्षिण भारतीय व्यंजन दोने में हर भक्त को दिए जाते हैं। यहां मंदिर परिसर में अनेक सुंदर कलात्मक चित्रकारी युक्त मंदिरों के साथ नवग्रह मंदिर अति आनंददायी अनुभूति देता है। इसकी विशेषता यह है कि **यहां सभी नवग्रह अपनी पत्नियों के साथ प्रतिष्ठित हैं।**

ऐसा मंदिर मैंने अन्यत्र नहीं देखा है। **सूर्यदेव अपने माता-पिता के साथ भी तथा अपनी पत्नियों और पुत्र के साथ भी यहाँ दर्शन देते हैं।** इस तरह यह मंदिर भारतीय सांस्कृतिक परंपराओं के साथ परिवार भाव को विशेष रूप से पोषित करता है जो आज के समाज की

प्रथम आवश्यकता है। धार्मिक समारोहों के साथ-साथ, मंदिर आम लोगों के लिए कई तरह की सेवा भी देता है जिसमें बच्चों को भरतनाट्यम नृत्य सिखाना भी है। हम जब भी बेंगलुरु में होते हैं, तब प्रतिदिन सूर्योदय के समय इस मंदिर के दर्शन करना और प्रभात वेला में मंदिर परिसर की पवित्र शांति में बैठकर आनंद का अनुभव करना हमारी दिनचर्या में सम्मिलित होता है। मेरे साथ इस मंदिर के दिव्य अनुभव जुड़े हैं। आप जब भी बेंगलुरु जाएँ तो इस मंदिर के दर्शन अवश्य कीजिए।

- डॉ स्नेहलता श्रीवास्तव जी, इंदौर (म. प्र.)

पत्रिका की प्रूफ रीडिंग करने के लिए
सॉनल जी ऑमर का धन्यवाद

विज्ञापन करें

यदि आप भारतीय परम्परा की पत्रिका और वेबसाइट पर विज्ञापन देना चाहते हैं, तो हमसे संपर्क करें।

पत्रिका में आधा पेज और पूरा पेज विज्ञापन उपलब्ध है। वेबसाइट पर 2 प्रकार के बैनर उपलब्ध हैं, जिन्हें 3 स्थानों पर देखा जा सकता है।

कृष्ण जन्मोत्सव, जिसे जन्माष्टमी के नाम से भी जाना जाता है, भगवान श्रीकृष्ण के जन्मदिन के रूप में मनाया जाता है। यह त्योहार विशेष रूप से उत्तर भारत, महाराष्ट्र, गुजरात और अन्य भागों में बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। इसके दूसरे दिन दही हांडी का आयोजन होता है, जो मथुरा और वृंदावन में भगवान कृष्ण के बचपन की लीलाओं को याद करता है।

कृष्ण जन्मोत्सव का महत्व:

भगवान श्रीकृष्ण का जन्म, अष्टमी तिथि को, भाद्रपद माह के कृष्ण पक्ष में रोहिणी नक्षत्र में हुआ था। उनका जन्म कंस के अत्याचारों से पृथ्वी को मुक्त करने और धर्म की पुनर्स्थापना के लिए हुआ था।

इस दिन भक्त पूरे दिन उपवास रखते हैं और रात को भगवान कृष्ण का जन्म होने पर उपवास खोलते हैं। मंदिरों और घरों में भगवान कृष्ण की झांकियां सजाई जाती हैं, और मंदिरों में विशेष पूजा-अर्चना करते हैं। जन्म की घटनाओं का मंचन किया जाता है। आधी रात को कृष्ण जन्म का उत्सव मनाया जाता है, जब भगवान का जन्म हुआ था। इस समय भगवान की मूर्तियों का दूध, दही, घी, शहद और गंगाजल से अभिषेक किया जाता है और माखन-मिश्री का भोग लगाया जाता है।

दही हाण्डी महोत्सव

दही हांडी का त्योहार कृष्ण जन्माष्टमी के अगले दिन मनाया जाता है। यह मुख्यतः महाराष्ट्र में बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। **भगवान कृष्ण को बचपन में मक्खन और दही बहुत पसंद थे और वे अपने दोस्तों के साथ मिलकर मटकी फोड़ते थे। इस परंपरा को याद करते हुए दही हांडी का आयोजन किया जाता है।**

मटकी को रंग-बिरंगी सजावट से सजाया जाता है और ऊँचाई पर मटकी लटकाई जाती है, जिसमें दही, मक्खन, और अन्य मिठाइयां भरी होती हैं। युवक-युवतियों की टोलियां मानव पिरामिड बनाकर मटकी फोड़ने की तैयारी करती हैं। पूरे आयोजन स्थल पर हर्षोल्लास और संगीत का माहौल होता है। लोग ढोल-बाजे के साथ नाचते-गाते हुए उत्सव को मनाते हैं।

कृष्ण जन्मोत्सव और दही हांड़ी केवल धार्मिक त्योहार ही नहीं हैं, बल्कि ये हमारी संस्कृति, परंपराओं और सामूहिकता को भी प्रकट करते हैं। भगवान कृष्ण के जीवन और लीलाओं से हमें प्रेम, साहस और धर्म की रक्षा का संदेश मिलता है।

यह त्योहार हमें एकजुट होकर खुशियाँ मनाने और अपने सांस्कृतिक धरोहर को सहेजने का अवसर प्रदान करता है।

WWW
पूरा पढ़े

MX CREATIVITY
Brand Creation & Digital Marketing

LOOKING FOR CREATIVE TALENTS?

"We Love Being Creative
You Love Results
So We Focus On Both"

WHY YOU NEED US?
WE DESIGN YOUR DREAM.....

Unleash creativity beyond limits with our innovative solutions at MX Creativity. Where ideas take flight, and visions come to life, we redefine possibilities in the world of design and innovation.

WEB DESIGN & DEVELOPMENT

Elevate your online presence with our expert Web Design and Development services – where innovation meets seamless functionality for a captivating digital experience.

APPS DESIGN & DEVELOPMENT

Transform ideas into interactive reality with our cutting-edge mobile app development. Amplify your reach and engagement through strategic marketing that propels your app to success in the digital landscape.

PRINT DESIGN & BRAND IDENTITY

Bring your brand to life on paper with our dynamic print media solutions. Elevate your identity through impactful branding that leaves a lasting impression in the tangible world.

www.mxcreativity.com
info@mxcreativity.com

Get In Touch Now..!
+91 8080 5187 45

गोवत्स द्वादशी

बछ बारस

भादवा महीने में कृष्ण पक्ष की बारस (द्वादशी) को बछ बारस के रूप में मनाया जाता है। जिसे **"वत्स द्वादशी" और "गोवत्स द्वादशी"** भी कहते है।

बछ बारस का महत्व मुख्यतः गायों और उनके बछड़ों की पूजा से जुड़ा है। हिन्दू धर्म में गाय को माँ का दर्जा दिया गया है और उसे बहुत पवित्र माना जाता है। गाय के बछड़ों की पूजा करने से संतान सुख और परिवार की समृद्धि का आशीर्वाद मिलता है। इस दिन महिलाएं सुबह स्नान करके व्रत रखती हैं और गाय-बछड़े की पूजा करती हैं। साथ ही वे गाय के गोबर से बने प्रतिकृति की पूजा करती हैं माताएं अपनी संतानों के लिए दीर्घायु और स्वास्थ्य की कामना करती हैं। **बछ बारस के दिन गाय का दूध और दूध से बने पदार्थ जैसे दही, मक्खन, घी आदि का उपयोग नहीं किया जाता। इस के अलावा गेहूँ तथा उससे बनी चीजें भी नहीं खाते है।**

बछ बारस का यह त्योहार हमारे सांस्कृतिक और धार्मिक जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इस दिन की पूजा-अर्चना और व्रत से न केवल संतान की भलाई होती है, बल्कि यह हमारे समाज में पशु प्रेम और संरक्षण की भावना को भी प्रबल बनाता है।

बछ बारस की पूजा कैसे करते है ?

WWW पूरा पढे

बछ बारस की कथा -

WWW पूरा पढे

स्वतंत्रता की वर्षगांठ का शुभ दिन आया,
तिरंगे की शान से फैला, हर दिल में उजाला।
वीरों की कुर्बानी को याद करें हम मिलकर,
विजय गाथा के गीत गाए, यह देश है निराला।